लोक गीतों में गुजराती गंध

डॉ मंजु तॅवर

गुजरात का भी ऐसा एक अपना भारतीय गुजरातीपन है, जिसके मूल में यहां की भौगोलिक स्थिति, विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों का यहां आना और बस जाना है। इसलिए लोक–संस्कृति की दृष्टि से गुजरात को दो प्रमुख घटकों के माध्यम से देखा जा सकता है।

गुजरात के लोकगीत जहां एक ओर गुजरात के लोगों के रीति रिवाज और परंपराओं को प्रगट करते हैं वहीं दूसरी ओर प्रेरणाप्रद संस्कारों का संवर्धन भी करते हैं। जिस जमाने में लड़कियों को स्कूल पाठशालाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाती थी, उस समय व्रत उत्सवों के साथ जुड़े गीत और कथाओं ने उन्हें शिक्षा देने का काम किया है। इन गीतों ने ही किशोरियों का मन इस तरह का बनाया कि उनके लिए वर पसंद करने और शादी करने का समस्त अधिकार उनके बड़ेा के हाथ में है। इन गीतों ने उन्हें उनके उत्तरदायित्व के प्रति भी जाग्रत किया। इस प्रकार ये कथाएं और गीत ही सामाजिक तथा पारिवारिक मानस के विकास एवं शिक्षण के माध्यम रहे। वस्तुतः यही एक प्रकार से परंपरागत व्यक्तित्व को गढ़ने वाले पाठ्यक्रम थे, ग्रेजुएशन के कंडेंस्ड कोर्स थे। हालांकि, कन्या को अपने लिए वर पसंद करने की छूट नहीं थी, लेकिन उसकी पसंदगी को वाणी देने वाले, उसकी पसंदगी को व्यक्त करने वाले, दादा को लक्षित करते हुए गीत थे कि वे उसके लिए कैसा वर देखें। यदि कोई ग्राम कन्या स्वयं ही किसी को पसंद करे और उसके साथ घर से भाग जाए तो उसके उपर कैसी कैसी विपत्ती आती है, इस बात को बतलाने वाले, ऐसी ही किसी घटी घटना के आधार पर रचे हुए गीत थे।